शोध-सारांश

गंभीर अध्ययन चिंतन के फलस्वरूप यह ज्ञात होता है कि सांप्रदायिकता और विभाजन का इतिहास बहुत प्राचीन नहीं है। सांप्रदायिकता और विभाजन की ऐतिहासिक जड़ों की गहराई से खोज-बीन के उपरांत पाते हैं कि सांप्रदायिक नेताओं ने अपनी सांप्रदायिक विचारधारा के अनुरूप भारत को एक लोकतांत्रिक देश बनने से पूर्व किस तरह देश को टुकड़ों में बाँटा था। भारत विभाजन सिर्फ देश को दो टुकडो में बाँटने कि ही घटना नहीं थी बल्कि मानवीय इतिहास में इससे बड़ा हादसा शायद ही कोई अन्य हो। आज भी जिसे संपूर्ण दुनिया में एक वीभत्स घटना के रूप में देखा जाता है। सांप्रदायिकता का आधार धर्म और सांप्रदायिक विचारधारा है जो फूट डालो और अपनी विचारधारा को थोपने का धूर्ततापूर्ण व्यवहार पर आधारित कार्य है जिसका उद्देश्य समानता पर आधारित न होकर विषमता पर आधारित है। ये निहायत कुटिल-कपटी और सामाजिक समानता के विपरीत एक तरह से वैमनष्यता पर आधारित कार्य है। जबकि सामान्य जनता को दिल्ली और करांची में सांप्रदायिक नेताओं के द्वारा लिये गए फैसले के बारे में शायद ही जानकारी होती है जिसका दूरगामी गंभीर परिणाम उन मासूम आम जनता के जीवन पर पड़ता है और इसका खामियाजा आम गरीब मासूम हिंदू-मुस्लिम जनता को अपनी जान देकर भुगतना पड़ता है। अगर वे सांप्रदायिक नेता आम जनता का सच्चा प्रतिनिधि होते तो इस तरह के सांप्रदायिक फैसले नहीं देते जिनसे लाखों लोगों को जान दे कर इसकी कीमत क्यों चुकानी पड़ती? क्योंकि अधिकांश बड़े राजनीतिक–सांप्रदायिक नेता सांप्रदायिक-वैमनष्यता फ़ैलाने का कार्य करते हैं। इस तरह सांप्रदायिक दंगा फ़ैलाने में इन कुटिल बुद्धिजीवियों की अहम् भूमिका होती है। क्योंकि ये अवसरवादी सांप्रदायिक नेता आम ग़रीब जनता में सांप्रदायिक वैमनष्यता फैला कर हिंदू-मुस्लिम और अन्य धार्मिक, सांस्कृतिक, विषमताओं में बाँट कर अपनी अवसरवादिता को सफल करते हैं। जिसे समय रहते आम जनता को इनकी कुटिलता को समझना बहुत जरुरी है। हिंदुस्तान का विभाजन सिर्फ जमीन का दो टुकड़ों में बँट जाना नहीं है बल्कि सदियों से मिलजुल कर रह रहे हिन्दू-मुस्लिम, सिख, इसाई परिवार के आपसी सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों पर राजनीति से प्रेरित सांप्रदायिकता का एक प्रहार है। जिससे सदियों से चले आ रहे सामाजिक-सांस्कृतिक संबंधों पर आघात हुआ था और यह आघात वे आज भी लगातार झेलने को विवश हैं। आये दिन हम समाचार पत्रों और अन्य संचार माध्यमों के द्वारा दंगों की ख़बर देखते और सुनते हैं। इनमें से शायद ही कोई ऐसा दंगा हो जो भ्रष्ट राजनेताओं की कुटिल चाल के परिणाम न हों अर्थात अधिकांश दंगे, राजनीतिक दलों के सांप्रदायिक नेताओं के द्वारा बहुत ही सुनियोजित तरीके से करवाये जाते हैं जिनकी शिकार आम भोली-मासूम जनता बनती है। भारत के इतिहास में जब भी

कभी व्यक्तिगत या सांप्रदाय विशेष के लाभ के लिए लोगों की भावना को भड़काया गया है वहाँ दंगे हुए हैं। इन दंगों में किसी नेता या बड़े लोगों की जानें नहीं जाती हैं, जान जाती है सिर्फ मासूम आम गरीब निर्दोष जनता की। जिसमें हिंदू-मुस्लिम सिख, इसाई ,बौद्ध आदि सब शामिल होते हैं।

विभाजन की त्रासदी पर गंभीर चिंतन-मनन करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि यह जमीन पर पड़ने वाली सीमा-रेखा मात्र नहीं है बल्कि दिलों को भी चीर कर रख देने वाली वीभत्स घटना है। इसके पहले सांप्रदायिक नेता अक्सर आम मासूम लोगों में यह भ्रम फैलाते हैं कि वे अपने धर्म और जाति के लिए लड़ रहे हैं लेकिन सचाई यह है कि उनका धर्म से कोई लेना देना नहीं होता है बल्कि वे तो निर्दोष जनता को सिर्फ हथियार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। धर्म के नाम पर मासूम लोगों की भावनाओं से खिलवाड़ करना सबसे आसान होता है, इसलिए ऐसे नेता या संगठन धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह करते हुए सांप्रदायिकता फ़ैलाने में सफल हो जाते हैं।

विभाजन के परिदृश्य से इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अंग्रेजों की विभाजन नीति, सांप्रदायिक संगठनों के नेताओं का लालच एवं कांग्रेस जैसे रजनीतिक दल की आम मासूम जनता के प्रति उदासीनता के करण देश का विभाजन हुआ। यह बहुत बड़ी बिडम्बना है कि सांप्रदायिकता की जिस समस्या से बचने के लिए देश का विभाजन हुआ अन्ततः वह आज भी बदस्तूर जारी है, पता नहीं कब हमें इन गंभीर समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। विभाजन के बाद सबसे ज्यादा सांप्रदायिक दंगे हुए। लाखों लोगों को विस्थापित होना पड़ा। चारों तरफ आगजनी, लूटमार, बलात्कार के बीच आम गरीब जनता अकेली पिसती रही और हमारे राजनीतिक सांप्रदायिक प्रतिनिधि मूकदर्शक की तरह सब कुछ देखते रहे। सांप्रदायिक संगठनों एवं साम्राज्यवादी ताकत के आगे अन्य राजनीतिक दलों को झुकना पड़ा और नहीं चाहने के बावजूद भी विभाजन को स्वीकार करना पड़ा।

विभाजन को हमारे देश के राजनीतिक दलों ने अवश्य स्वीकार कर लिया लेकिन भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास के मध्यम से इस विभाजन को स्वीकार करने से इंकार जरूर किया है। वे विभाजन को राजनीतिक बेईमानी मानते हैं। उन्होंने अपने 'तमस' उपन्यास के माध्यम से आम जनमानस के दुःख-दर्द को बड़ी मार्मिकता से व्यक्त किया है।

देश की जनता सोचती थी कि जब देश आजाद होगा तो उन्हें वो तमाम सुख-सुविधाएँ हासिल होंगी जो गुलामी के दिनों में उपलब्ध नहीं हो पायी थीं। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के पीछे एक लक्ष्य था, उस लक्ष्य के पीछे बहुत सारे जीवन-मूल्य थे लेकिन हम पाते हैं कि आजादी से पूर्व जिन जीवन-मूल्यों को लेकर लड़ाई लड़ी गई, विभाजन के दौरान उन तमाम मूल्यों की बार-बार धज्जियाँ

उड़ाई गई। उपन्यासकार भीष्म सहनी ने इस उपन्यास के माध्यम से संवेदनशीलता के साथ तथ्यों को भी अभिव्यक्त किया है। रचनाकार ने विभाजन की पीड़ा को स्वयं भोगा था इसलिए उनके इस उपन्यास में यथार्थ-बोध अत्यंत मार्मिकता के साथ उभरकर सामने आया है। विभाजन के कारण सबसे ज्यादा कष्ट स्त्रियों को भोगना पड़ा। हिंदू एवं मुस्लिम साम्प्रदायिकता के कारण सर्वाधिक पीड़ा उन्हें झेलनी पड़ी। यदि वे किसी तरह दंगाईयों से बच कर घर पहुँच भी जाती थीं तो उनके भाई, पिता और पति उन्हें अपनाने से इंकार कर देते थे।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि विभाजन ने सिर्फ सरहदों को बाँटने का ही काम नहीं किया बल्कि आम गरीब मासूम लोगों को शरीरिक, मानसिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से तबाह और बर्बात भी कर दिया था जिससे उनकी आने वाली पीढ़ी भी नहीं उभर सकी है।